॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

सामवेदीय

सावित्र्युपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि सर्वं ब्रह्मौपनिषदं माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा ब्रह्म निराकरोदनिराकरणमस्त्वनिराकरणं मेऽस्तु तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु ते मयि सन्तु।

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

सविता एवं सावित्रीकी सर्वव्यापकता; सावित्रीके चार पाद; सावित्रीको जाननेका फल; बला-अतिबला विद्याओंकी उपासना

हरिः ॐ॥ सविता कौन हैं और सावित्री कौन हैं? अग्निदेव ही सविता हैं, पृथिवी सावित्री हैं। वे अग्निदेव जहाँ हैं, वहाँ पृथिवी है। जहाँ पृथिवी है, वहाँ अग्निदेव हैं। वे दोनों योनि अर्थात् विश्वके उत्पादक हैं। वे दोनों एक जोड़ा हैं। सविता देव कौन हैं और सावित्री देवी कौन हैं? वरुण ही सविता हैं और आप (जल) सावित्री हैं। जहाँ वरुण हैं, वहाँ आप हैं; और जहाँ आप (जल) हैं, वहाँ वरुण हैं। वे दोनों योनि अर्थात् विश्वके जन्मदाता हैं। वे दोनों एक जोड़ा हैं। सविता कौन हैं और सावित्री कौन हैं? वायुदेव सविता हैं, आकाश सावित्री हैं। जहाँ वायु है, वहाँ आकाश है; जहाँ आकाश है, वहाँ वायु है। वे दोनों योनि हैं, वे दोनों एक जोड़ा हैं। सविता कौन हैं और सावित्री कौन हैं? यज्ञ सविता हैं और छन्द सावित्री हैं। जहाँ यज्ञ है, वहाँ छन्द हैं; जहाँ छन्द हैं, वहाँ यज्ञ है। वे दोनों योनि हैं। वे दोनों एक जोड़ा हैं। सविता क्या हैं और सावित्री क्या हैं? गरजनेवाले मेघ सविता हैं और विद्युत् सावित्री हैं। जहाँ गरजनेवाले मेघ हैं, वहाँ विद्युत् हैं; जहाँ विद्युत् है, वहाँ गरजनेवाले मेघ हैं। वे दोनों योनि हैं। वे दोनों एक जोड़ा हैं। सविता क्या हैं और सावित्री क्या हैं? आदित्य सविता हैं और द्युलोक सावित्री हैं। जहाँ आदित्य हैं, वहाँ द्युलोक है; जहाँ द्युलोक है, वहाँ आदित्य हैं। वे दोनों योनि हैं। वे दोनों एक जोड़ा हैं। सविता क्या हैं और सावित्री क्या हैं? चन्द्र ही सविता हैं और नक्षत्र सावित्री हैं। जहाँ चन्द्र हैं, वहाँ नक्षत्र हैं; जहाँ नक्षत्र हैं, वहाँ चन्द्र हैं। वे दोनों योनि हैं। वे दोनों एक जोड़ा हैं। सविता क्या हैं और सावित्री क्या हैं? मन ही सविता है और वाणी सावित्री है। जहाँ मन है, वहाँ वाणी है; जहाँ वाणी है, वहाँ मन है। ये दोनों योनि हैं। वे दोनों एक जोड़ा हैं। सविता क्या हैं और सावित्री क्या हैं? पुरुष सविता है, स्त्री सावित्री है। जहाँ पुरुष है, वहाँ स्त्री है; जहाँ स्त्री है, वहाँ पुरुष है। वे दोनों योनि हैं। वे दोनों एक जोड़ा हैं॥ १—९॥

उस सावित्रीका प्रथम पाद है '**भूः*—तत्सवितुर्वरेण्यम्।**' अग्नि ही वरेण्य है। आप (जल) वरेण्य है। चन्द्रमा वरेण्य है (वरेण्य अर्थात् वरणीय,

---

* सावित्री देवताका मन्त्र—ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
प्रथम पाद—भूः अर्थात् भूलोक उस सविता देवताका वरेण्य है। महिमा है।
द्वितीय पाद—भुवः अर्थात् तेजोमय आप (अन्तरिक्ष लोक) उस सविता देवताके तेजका हम ध्यान करते हैं।
तृतीय पाद—स्वः अर्थात् स्वर्लोक—जो हमारी बुद्धियोंको प्रेरित करे।

पूज्यस्वरूप, प्रशंसनीय स्वरूप)। उस सावित्रीका द्वितीय पाद है तेजोमय आप अर्थात् जल '**भुवः—भर्गो देवस्य धीमहि।**' अग्नि ही वह भर्ग अर्थात् तेज है, आदित्य ही भर्ग है। चन्द्रमा ही भर्ग है। उस सावित्रीका यह तीसरा पाद है '**स्वः—धियो यो नः प्रचोदयात्।**' स्त्री और पुरुष दोनों प्रजोत्पादन करते हुए (गृहस्थाश्रमका पालन करते हुए) जो इस सावित्रीदेवीको इस प्रकार जानते हैं, वे पुनः मृत्युको नहीं प्राप्त होते। अर्थात् सविता देवताके उपासक मृत्युको जीत लेते हैं और अमरत्वको प्राप्त करते हैं।

बला-अतिबला विद्याओंके विराट् पुरुष ऋषि हैं, गायत्री छन्द है और गायत्री देवता हैं। अकार बीज है, उकार शक्ति है और मकार कीलक है। क्षुधा आदिके निवारणके निमित्त इसका विनियोग है। क्लींके द्वारा षडङ्गन्यास करे। '**ॐ क्लीं हृदयाय नमः, ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्लीं शिखायै वषट्, ॐ क्लीं कवचाय हुम्, ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ क्लीं अस्त्राय फट्।**'

अब ध्यानका वर्णन करते हैं। अमृतसे जिनके करतल आर्द्र हो रहे हैं, सब प्रकारकी सञ्जीवनी शक्तियोंसे जो सम्पन्न हैं, पापोंका नाश करनेमें जो सुदक्ष हैं तथा जो वेदोंके सारस्वरूप, किरणात्मक, प्रणवरूप विकारवाले एवं सूर्यनारायणके सदृश सुदीप्त शरीरवाले हैं, उन बला और अतिबला विद्याओंके अधिष्ठातृ-देवताओंको मैं निरन्तर अनुभव करता हूँ। बला-अतिबला विद्याओंके अधिष्ठातृ-देवताका मन्त्र है—

ॐ ह्रीं बले महादेवि ह्रीं महाबले क्लीं चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिप्रदे तत्सवितुर्वरदात्मिके ह्रीं वरेण्यं भर्गो देवस्य वरदात्मिके अतिबले सर्वदयामूर्ते बले सर्वक्षुद्भ्रमोपनाशिनि धीमहि धियो यो नो जाते प्रचुर्यः या प्रचोदयादात्मिके प्रणवशिरस्कात्मिके हुं फट् स्वाहा।

इस प्रकार जाननेवाला कृतकृत्य हो जाता है। वह सावित्रीदेवीके ही लोकको प्राप्त होता है। यह उपनिषद् है।

॥ सामवेदीय सावित्र्युपनिषद् समाप्त ॥

शान्तिपाठ

ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि सर्वं ब्रह्मौपनिषदं माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा ब्रह्म निराकरोदनिराकरणमस्त्वनिराकरणं मेऽस्तु तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु ते मयि सन्तु।

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

ब्रह्मको ढूँढ़ना चाहिये

अथ यदिदमस्मिन् ब्रह्मपुरे दहरं पुण्डरीकं वेश्म दहरोऽस्मिन्नन्तरा-काशस्तस्मिन्यदन्तस्तदन्वेष्टव्यं तद्वाव विजिज्ञासितव्यमिति॥

(छान्दोग्य० ८।१।१)

अब इस ब्रह्मपुर (शरीर)-के भीतर जो सूक्ष्म कमलसदृश स्थान है, इसमें जो सूक्ष्म आकाश है और उसके भीतर जो (ब्रह्म) है, उसको ढूँढ़ना चाहिये और उसीकी विशेष जानकारी प्राप्त करनी चाहिये।